अलोकिक गीतांजलि - 3

☐ अन्तर्मन में ज्योति जगा लो

ओम शान्ति, शान्ति..···...ओम शान्ति

अन्तर्मन में ज्योति जगा लो, होगा दूर अंधेरा,

शिव का कर लो ध्यान, आ रहा है पावन पुण्य सवेरा,

तुम हो कौन, कहां से आये, अपने आप को जानो,

राजयोग के द्वारा अपना परमपिता पहचानो

इसी राजपथ पर चलकर, तुम पा लो अपना बसेरा,

होगा दूर अंधेरा...

तुम हो आत्मा तन से न्यारे, परमात्मा को प्यारे

दिव्य गुणों को धारण करके, योगी बनो दुलारे

ज्योति बिंदु ही तोड़ेगा, यह माया मोह का घेरा

होगा दूर अंधेरा.....

ओम शान्ति, ॐ शान्ति..···...ओम शान्ति

➢➢ ओम शान्ति, शान्ति..... ओम शान्ति

➳ _ ➳ मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ

→ स्वयं को इस स्वरुप में स्थित करो

➢➢ अन्तर्मन में ज्योति जगा लो... होगा दूर अंधेरा,

➳ _ ➳ अपने Subconscious Mind को जागृत करो

→ ज्ञान का प्रकाश अपने आंतरिक मन में डालो

➳ ➳ स्वयं में परिवर्तन लाने के लिए

→ हमें Sub Conscious Mind तक पहुंचना होगा

- क्योंकि आदतें SubConscious Mind में होती हैं
- और हम प्रतिज्ञा Conscious Mind में करते रहते हैं

➳ _ ➳ Subconscious Mind argument (बहस) नहीं करता

→ Subconscious Mind बुद्धू है

- उसे जो भी दोगे... वह उसे स्वीकार कर लेगा

➳ _ ➳ अपने अंतरमन तक कैसे पहुंचे ?

→ बार बार एक ही बात रिपीट करे

→ सुबह उठते ही अगले 10 मिनट संकल्प दें

→ रात को सोने से पहले संकल्प दें

→ **Visualization Techniques का इस्तेमाल करें**

- आप एक Theatre में बैठे हैं
- और आप बड़ी स्क्रीन पर उन घटनाओं को होते हुए देख रहे हैं
- उस परदे में प्रवेश कीजिये
- और आप वो कर रहे हैं जो आप चाहते हैं
- फिर उस स्क्रीन से बहार निकलिए
- और अपने परिवर्तित पार्ट को फिर से देखिये
- स्क्रीन की अब टोली बन गयी है
- वो टोली अब मैंने खा ली है
- और वह संस्कार अब मेरे खून में चला गया है
- इस तरह से मनोविज्ञान काम करता है

→ जिस चीज़ को Visualize करना है... उसे बड़ा बड़ा देखिये

➢➢ शिव का कर लो ध्यान, आ रहा है पावन पुण्य सवेरा,

➳ _ ➳ चेतना जागृत हो रही है

→ बेहोशी से होश में आ रहे हैं

➢➢ तुम हो कौन, कहां से आये, अपने आप को जानो,

➳ _ ➳ How To Visualize परमधाम ?

→ परमधाम एक गाँव है

→ परमधाम एक गार्डन है

→ परमधाम एक किला है

→ परमधाम एक स्कूल है

→ परमधाम एक University है

→ परमधाम एक Wonder Land है

→ यहाँ पर क्या है ?

- ब्रहम तत्व
- बहुत सारे प्रकाश पुंज
- बिलकुल मध्य में एक महाज्योति
  - फिर उस ज्योति के चारों और घूमो
- शांत वातावरण

→ यहाँ पर क्या नहीं है ?

- पांच तत्व
- ठंडी गर्मी
- सूरज .. चाँद .. सितारे
- कोई भाषा नहीं... सिर्फ मौन
- यहाँ कुछ नहीं खाते पीते

➳ _ ➳ मैं आत्म साक्षी हूँ

→ मेरे सामने स्त्री पुरुषार्थ के 84 शरीर खड़े हैं

■ और मैं आत्मा एक के करके उन सभी शरीरों में प्रवेश कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं मास्टर भगवान हूँ... उसका Deputy हूँ

→ भगवान नीचे डायमंड हाल में जा रहा है

■ और मैं परमधाम में उसका राज्य संभाल रहा हूँ

➢➢ राजयोग के द्वारा अपना परमपिता पहचानो

➳ _ ➳ दूसरों को राजयोग सिखाने से पहले यह check करो की

→ आपने राजयोग का कितना अभ्यास किया है ?

■ आपने राजयोग से क्या क्या प्राप्तियां की हैं ?

➢➢ इसी राजपथ पर चलकर, तुम पा लो अपना बसेरा..

➳ _ ➳ तीव्र पुरुषार्थ के इस मार्ग पर भीड़ बहुत कम है

➢➢ होगा दूर अंधेरा...

➳ _ ➳ अँधेरा दूर होगा

→ Powerful Thoughts से....

➢➢ तुम हो आत्मा तन से न्यारे, परमात्मा को प्यारे

➳ _ ➳ उस एक बिंदी के साथ सर्व संबंधो का अनुभव कीजिये

➢➢ दिव्य गुणों को धारण करके, योगी बनो दुलारे

➳ _ ➳ बाबा कहते हैं :-

→ जो ज्ञानी है... वह मुझे बहुत प्रिय है...

■ जो योगी है... वह मेरा ही स्वरुप है

➢➢ ज्योति बिंदु ही तोड़ेगा, यह माया मोह का घेरा

➳ _ ➳ मैं एक मकडी हूँ और जाले में फंसी हूँ

→ ज्योति बिंदु उस जाले पर बोम्ब की तरह गिरती है

■ और वह जाला टूट कर बिखर जाता है

▶ और मैं आत्मा समपूरन रूप से स्वतंत्र हो जाती हूँ

➢➢ होगा दूर अंधेरा.....